अन्तरा-शब्दशक्ति

ताँका त्रिवेणी

ताँका संग्रह

कैलाश बिहारी सिंघल

ताँका त्रिवेणी

(ताँका संग्रह)

कैलाश बिहारी सिंघल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-89-5"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- कैलाश बिहारी सिंघल
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
TANKA TRIVENI BY KAILASH BIHARI SINGHAL
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

आत्मकथ्य 5

1. चुनाव विशेष 7
2. होली 8
3. तन-मन-धन की गति 9
4. पाथेय 10
5. मौन 11
6. अर्पण 12
7. खुशी 13

8. साज़ 14

9. विवेकानंद 15

10. स्वप्न 16

11. शब्द इत्र पर 17

12. संघर्ष 18

13. ध्वनि 19

14. अधर 20

15. मिट्टी 21

16. गुस्सा 22

17. शब्द 23

18. दिन-रात 24

19. यात्रा 25

20. भ्रमर 26

21. वक्त 27

22. हिन्दी 28

23. क्षमा 29

24. धोखा 30

25. प्रीत 31

26. नाद 32

आत्मकथ्य

मेरा जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में हुवा, पिताजी और चार बड़े भाई सभी निजी संस्थानों में नोकरियाँ करके जीवन यापन करते रहे, पिताजी का जगह जगह स्थानांतर होने से मेरी शिक्षा नही हो पाई, कविताओं का शौक बचपन से था, स्कूल के कार्यक्रमों में काव्य मंच के बड़े कवियों और कवयित्रियों से सुनी हुई कविताएं सुना कर खूब आनंद आता था।

जीवन में आर्थिक तंगी बहुत रही, गरीबी को नजदीक से महसूस किया, ऐसे माहौल में भी कविता के प्रति आकर्षण बना रहा। 1980/81 में उस समय की प्रख्यात कवयित्री डॉ.प्रभा ठाकुरजी, श्रीमती माया गोविंदजी को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. प्रभा ठाकुरजी के एक गीत ने मानसिक सम्बल प्रदान किया।

दिल जलाने से क्या होगा, ग़म सुनाने से क्या होगा...? ज़िन्दगी मुस्कुरायेगी, प्यार के गीत गाये जा। इस गीत ने जीवन की दिशा ही बदल दी और साहस प्राप्त हुआ। इसी बीच धामनोद नगर में लायन्स क्लब की स्थापना हुई। मंच पर सुनी हुई कविताऐं सुनाता था और लिखावट सुंदर होने से लायन्स क्लब के पत्र व्यवहार में सहयोग देना मुझे अच्छा लगता था। बस सभी व्यापारी मित्रों के सहयोग से नौकरी छोड़कर कॉटन (रुई) की दलाली प्रारम्भ की जो आज फल-फूल रही है। दोनो बेटे भी इसी व्यवसाय में साथ है।

मुख्य उद्देश्य- मेरा मुख्य उद्देश्य है जो कवि और कवयित्रियां या तो दिवंगत हो गए, या वृद्धावस्था या और किन्ही कारणों से आजकल मंच पर काव्य पाठ नहीं करते। लेकिन हिन्दी साहित्य को कुछ ऐसा साहित्य प्रदान कर गए जो आज भी प्रासांगिक है, उनकी रचनाएँ उनके ही नाम से ही मंच पर सुनाना, ताकि नवोदित रचनाकार कुछ ऐसा साहित्य सृजन करे, जिसे उनके न रहने पर मेरे जैसा कोई और कैलाश सिंघल उनकी रचनाओं को मंचों पर जीवित रख सके।

स्व लेखन-एक व्हाट्सएप समूह "काव्यप्रेमियों की महफ़िल" चार वर्ष पूर्व बनाया, उसी के माध्यम से डॉ. प्रीति सुराना जी से परिचय हुआ। उन्होंने मुझे अन्तरा शब्दशक्ति परिवार समूह में जोड़ा, लेकिन वहाँ सभी स्वरचित रचना ही भेजने का नियम था, मैं हताश हो गया क्यों कि मैंने कभी कोई स्व रचना नहीं लिखी थी।

प्रीति बहन ने कहा भैया भले ही चार लाइन लिखो पर स्वयं लिखो। बस प्रयास किया तो माँ शारदे की कृपा और प्रीति जी की प्रेरणा से कुछ-कुछ लिखने लगा हूँ। ये पुस्तक उसी प्रयास की देन है।

यह किताब जापानी काव्य की कई सौ साल पुरानी काव्य विधा ताँका पर है। इस विधा को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के दौरान काफी प्रसिद्धि मिली। उस समय इसके विषय धार्मिक या दरबारी हुआ करते थे। हाइकु का भी उद्भव इसी से हुआ,..इसकी संरचना ५+७+५+७+७=३१ वर्णों की होती है। यह विधा मुझे अन्तरा शब्दशक्ति से ही सीखने को मिली।

मेरे कुछ आदर्श कवि भाई एवं कवयित्री बहनें जिनकी रचनाएं भी सस्वर सुना सकता हूँ,पर नही सुनाता कभी क्योंकि यह सभी कवि मंचों पर अभी स्वयं काव्य पाठ करते है। काव्यपाठ स्वान्तः सुखाय के लिये करता हूँ, कभी मानदेय नही लिया।

कैलाश बिहारी सिंघल

चुनाव विशेष

राष्ट्र निर्माण
मतदान से करो,
ये अधिकार
संविधान ने दिया
स्व निर्धारण करो ।1।

आपका मत
लोकतंत्र आधार
दूर करेगा,
देश से भ्रष्टाचार
हो स्वच्छ सरकार ।2।

बेचना मत
अपना अधिकार,
ढोना पड़ेगा
पांच वर्षों का भार
आत्मा कहे वो धार ।3।

होली

होली के रंग,
प्रियतम के संग,
पीकर भंग,
मचाते हुडदंग,
जैसे छिड़ी हो जंग ।1।

पिया के संग,
रंगना तन-मन
होके मगन,
जगा देना उमंग,
उड़ाना सब रंग ।2।

रंग में भंग,
मत करना तंग,
जमेगा रंग,
जग जाए उमंग,
फाग के नव-रंग ।3।

तन-मन-धन की गति

तन में गति,
परिश्रम से आती,
स्वस्थ रहना।
मेहनत करना,
क्षमता अनुसार ।1।

मन की गति
रखा कीजिए,
मंद होगा आनंद
ख्वाहिशें रखो कम,
बढ़ जाता है द्वंद ।2।

धन की गति
दान धरम करो,
मोक्ष मिलेगा
धन साथ न जाए,
सदुपयोग करो ।3।

पाथेय

बनो सहारे
सर्वहारा के तुम,
होंगे प्रसन्न
ईश्वर भी तुमसे
बन जाओ पाथेय ।1।

कृष्ण भी बने
द्रोपदी के सहारे,
चिर बढ़ाया
नारी लाज बचाई
बन कर पाथेय ।2।

मारुति बने
रामचन्द्र के दास,
मित्र सुग्रीव
नल नील बनाये
राम नाम पाथेय ।3।

मौन

मौन का दौर
गुंजा था चहुंओर,
हो गई भौर
नाचने लगे मोर,
पीहू-पीहू का शोर ।1।

मौन साधना
देती सदा ताकत,
कम बोलना
रिश्तों में सदाकत
अच्छी होती आदत ।2।

वो है खामोश
तुम पहल करो,
रिश्ते बचाओ
शीश पे हाथ धरो
क्षमा से मांग भरो ।3।

अर्पण

तन में रण,
मन से समर्पण,
धन का कण,
बचपन का प्रण,
कर दिया अर्पण ।1।

रात थी काली,
दिन में उजियाली,
सँध्या प्रहर
मिल गया जो क्षण
कर दिया अर्पण ।2।

राहों के कांटे,
चलते हुए डांटे,
हवा के चांटे,
बचा लिया जो तृण
कर दिया अर्पण ।3।

खुशी

मत हो दुःखी
किसी पैर से कांटे
हटा के देख
अपूर्व प्रसन्नता,
न मिले तो कहना ।1।

खुशी की पूंजी
बांटने से बढ़ती,
दर्द ए दास्ताँ
बांटने से घटती।
प्रिय से न छुपाना ।2।

हर्षित मन
गीत ग़ज़ल गाए,
ताल बे-ताल
खुशी की सरगम
प्रिया मन को भाए ।3।

साज़

हाथों में साज़
दिलकश आवाज,
नग़मे गाऐं,
स्वर प्रस्फुटित हों
सजनी को लुभाऐं ।1।

साज़ सजाऐं
ईश्वर को रिझाऐं,
भजन गाऐं
मनोकामना पूर्ण
धन्यवाद जताऐं ।2।

दिल के राज़
साज़ और आवाज़
दोनों मिलते,
गूंजी स्वर लहरी
सजते सर ताज़ ।3।

विवेकानंद

विवेकानंद
रामकृष्ण के शिष्य
ज्ञान जो बांटा,
पश्चिम था सयाना
विश्व ने लोहा माना ।1।

विवेकानंद
शून्य में विराटता,
खोजने वाले
भारत माँ के लाल,
हिन्दुस्तान के भाल ।2।

विवेकानंद
नरों में बने इंद्र
नरेंद्र नाम,
राष्ट्रीय स्वाभिमान
विश्व को दिया ज्ञान ।3।

स्वप्न

स्वप्न सलौने
मखमली बिछौने,
ज़िस्म की चाह,
भरती रही आह,
कर लिया निकाह ।1।

ताबिरे ख्वाब
होकर बे-हिज़ाब
था लाजवाब,
पर्दानशीं शबाब,
जो हुआ बे-नकाब ।2।

प्रेम का हक़
मिला यकबयक
देखे थे ख्वाब,
टूटे जो बे-सबब
बनके माहताब ।3।

शब्द इत्र पर

कागज़ी फूल
सुगन्ध से विहीन,
इत्र छिड़को
महक तो जायेंगे
होंगे अस्तित्व हीन ।1।

तन की खुश्बू
मन को महकाए,
धन का इत्र
संस्कार भी गंवाए
पवित्रता खो जाए ।2।

यादों की खुश्बू
इत्र से नही आये,
प्रेम का दीप
कोई न जला पाये,
पुष्प भी मुरझाये ।3।

संघर्ष

आता है जब
जीवन में संघर्ष
प्रभु की कृपा
समझना चाहिए,
विचलित न होना ।1।

होता है यह
परीक्षा का समय
धैर्य के साथ,
संघर्ष का सामना
सकारात्मक होना ।2।

जद्दोजहद
हो असमंजसता
इष्ट का जाप,
मन में हो संतोष
परेशां नही होना ।3।

ध्वनि

शंख की ध्वनि
युद्ध की उद्घोषणा
कृष्ण ने फूंका,
महाभारत काल
नाम था पाञ्चजन्य ।1।

गूंजे आरती
शंख घंटी की ध्वनि
पूजा पद्धति,
भारतीय संस्कृति
हर घर में गूंजती ।2।

शंख का नाद
हमेशा जो करते,
हृदय रोग
सब दूर हो जाते
योग की होती क्रिया ।3।

अधर

बन्द न करो
अधरों के किंवाड़
कुछ तो बोलो,
प्रियतम का हाथ
सदा रहेगा साथ ।1।

न हो आवाज़
लब थर थराए,
कम्पित साज़
सब कुछ बताए,
नैनों से समझाए ।2।

होंठों की भाषा
समझना भी कला
शुरू हो गया,
संवाद सिलसिला,
न रहा कोई गिला ।3।

मिट्टी

मिट्टी का तन
फिर कैसा ये भय,
मिट्टी की मिट्टी
होना ज़ब है तय,
जीवन में हो लय ।1।

संतोषी मन
सबसे बड़ा धन,
माटी का तन
सदा करे कीर्तन
होता रहे मगन ।2।

देह का दान
मृत्तिका का है मान,
होगा सम्मान
विद्या का बहुमान,
चिकित्सकीय ज्ञान ।3।

गुस्सा

गुस्सा न करें
मन हो बदहाल,
संयम रखें
सकारात्मक रहें
ज़िन्दगी खुशहाल ।1।

क्रोध न करें
समझदारी रखें,
क्षमा का दान
समस्या का निदान,
क्यों करें अभिमान ।2।

क्रोध जो आए
उस पल को टालें,
शांत हो जाएं
ईस्ट मंत्र का जाप
शांति अपने आप ।3।

शब्द

शुभ्र वस्त्राणी
माँ पुस्तक धारिणी,
हंस वाहिनी
सर्व दुख हारिणी,
हे जगत तारिणी ।1।

कर में माला
माता शुभ्र ज्योत्सना
वीणा वादिनी,
शुभ ज्ञान प्रदाता
सरस्वती ब्रह्माणी ।2।

माँ कृपा करो
श्वेत वस्त्र धारिणी,
धवल हंस
संसार विहारिणी,
शब्द ज्ञान प्रदायिनी ।3।

दिन-रात

सूरज चन्दा
दिन रात प्रहरी
चमके तारे,
अमावस की रात,
पूर्णिमा की सौगात ।1।

रात ओ दिन
स्त्रीलिंग ओ पुर्लिंग,
नदी किनारे
करते रहे सदा
सँध्या का आलिंगन ।2।

रात की मांग
कैसे भरेगा दिन,
दूर गगन
धरा है कमसिन,
सितारे गमगीन ।3।

यात्रा

आसान होगा
जीवन का सफर
कम से कम,
महत्वाकांक्षा रखो,
सकारात्मक रहो ।1।

जीवन यात्रा
छोटों को देखो तुम
बड़ों को नहीं,
मन को शांति मिले,
खुशी के फूल खिले ।2।

धार्मिक यात्रा
साल में एक बार
जरूर करें,
माता-पिता के साथ,
कष्ट हरे श्री नाथ ।3।

भ्रमर

मिलिंद मन
भरता रहा आह,
कली से प्रेम
प्राकृतिक पनाह,
मकरंद की चाह ।1।

कृष्ण को दास
श्याम वर्णी विलास,
चम्पा का पुष्प
गौर वर्णी राधाजी
भ्रमर माता माने ।2।

मधुप राग
गुलशन गुंजार
पराग रस,
हर कलिका चूमे,
डाल-डाल पे घूमे ।3।

वक्त

वक्त की मांग
खत्म हो आरक्षण,
देश का हित
प्रतिभा का सम्मान,
युवा शक्ति महान ।1।

पल की त्रुटि
सदी को मिला श्राप,
बन्द हो अब
आरक्षण का पाप,
समय का सन्ताप ।2।

भारत ज्ञान
विश्व में सम्मानित
देश का युवा,
स्वदेश में कुंठित
लम्हों की हार-जीत ।3।

हिन्दी

भाषा की बात
घोर काली है रात,
होगा प्रभात
लाएगा परिणाम
हिन्दी का अभियान ।1।

दिल में दर्द,
परिणीति है सर्द,
सबका साथ
जगाए स्वाभिमान,
हिन्दी का अभियान ।2।

हाथों में हाथ,
बने श्रृंखला साथ,
जो हो अंजाम
मातृभाषा का मान,
हिन्दी का अभियान ।3।

क्षमा

जो कहा-सुना
वो माफ किया जाए,
मन में ग्लानि
बहुत तड़पाए,
अस्वस्थ कर जाए ।1।

सबका साथ
सबका हो विकास,
मन की भ्रांति
दूर करते रहे,
कहा-सुना माफ हो ।2।

क्षमा का दान,
वीरस्य भूषणम
मन में शांति,
पारिवारिक स्नेह,
संपन्नता का श्रोत ।3।

धोखा

कौन है साथ,
कौन दे देगा धोखा
पता न चला,
दोस्त दुश्मन बने,
हाथ खून में सने ।1।

फरेबी दोस्त
दुश्मन से खराब
पीठ में छुरा
घोंप देता है तब,
हित न सधे जब ।2।

दगा न करो,
अविश्वास से डरो,
जियो या मरो,
दुःख संताप हरो,
भव सागर तरो ।3।

प्रीत

निभाना प्रीत,
परिवार की रीत,
गर्मी या शीत,
अधरों पर गीत,
सजता है संगीत ।1।

टूटी दीवार,
बिखरा परिवार,
सम्हालो यार,
रिश्तों का ये संसार,
निभाओ प्रीत प्यार ।2।

दोस्ती निभाना,
जैसे कृष्ण सुदामा,
विश्व ने माना,
आश्चर्य में ज़माना,
लुटा दिया खज़ाना ।3।

नाद

ब्रह्म है नाद
संगीत लहरियाँ
बनाती साज़,
ध्वनियों से गुंजते
सप्त सुर संवाद ।1।

मधुर साज़,
कर्णप्रिय आवाज़,
मन मोहते
ग़ज़ल गीतकार,
गायकी के फ़न्कार ।2।

गीता संवाद,
ब्रम्हांड में मौजूद,
कृष्ण की वाणी
संग्रह होगा नाद,
वैज्ञानिक प्रयास ।3।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - कैलाश बिहारी सिंघल
पिता - स्व. श्री बिहारीलाल जी सिंघल
माता - स्व.श्रीमती बसन्ती देवी सिंघल
पत्नी - स्व. सौ. मनोरमा सिंघल
जन्म - धामनोद, जिला धार, मध्यप्रदेश
शिक्षा - हायर सेकेण्डरी
कार्य - कॉटन ब्रोकर्स एवं कमीशन एजेंट (38 वर्ष)
प्रकाशन - अंतरा शब्द शक्ति के प्रकाशन में साझा संग्रह में रचनाओं का प्रकाशन, सृजक सृजन समीक्षा पुस्तक प्रकाशित, लोकजंग अखबार में रचनाओं का प्रकाशन।
सम्मान - अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018।
एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया करनाल (हरियाणा) द्वारा राष्ट्र गौरव अवार्ड 2018।
उद्देश्य - स्वान्तः सुखाय

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-89-5
मूल्य- 60/-